# अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम

Course-M.A. History, Part-II, Paper-XV; Prepared by-Dr. P.K. Poddar

अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम विश्व इतिहास की एक प्रमुख घटना है। इसके कई महत्वपूर्ण परिणाम निकले जिन्होंने भविष्य के इतिहास को गंभीरतापूर्वक प्रभावित किया। इसके परिणाम अमेरिका तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि ब्रिटेन, फ्रांस, भारत, आयरलैंड, कनाडा, स्पेन एवं हालैंड भी प्रभावित हुए। स्वतंत्रता संग्राम के फलस्वरूप अमेरिका का उदय संसार के इतिहास में स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम के फलस्वरूप इंगलैंड के तेरह अमरीकी उपनिवेश स्वतंत्र हो गए। 1783 ई० की वर्साय संधि के द्वारा ब्रिटेन ने उनकी स्वतंत्रता मान ली। अमरीकी उपनिवेशों को अपने भाग्य का निबटारा करने का अधिकार मिला। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की गयी।

आजादी की घोषणा में अमेरिका ने इंगलैंड के साथ स्पष्ट शब्दों में सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था। युद्ध काल में ही सरकार की स्थापना के उद्देश्य से संविधान बनाने की तैयारी भी प्रारंभ कर दी गयी थी। घोषणा-पत्र उसी तैयारी का प्रतीक था। सरकार का मुख्य उद्देश्य नागरिकों के जीवन, आजादी और सुख की व्यवस्था करने का सिद्धान्त सर्वसम्मति से स्वीकृत हो चुका था। यदि सरकार इन उद्देश्यों का विघातक बन जाय तो लोगों को यह अधिकार है कि वे उसे बदल दें या समाप्त कर दें और उसके स्थान पर नयी सरकार की स्थापना करें जो उनके हित में अच्छा काम कर सके।

आजादी की घोषणा के बाद लोकतंत्र-शासन का वह बीज अंकुरित हुआ जो सदियों से यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध उगाने का प्रयत्न कर रहा था। शासन करने वाले

राष्ट्र के मालिक न रहे, बल्कि वे जनता के सेवक बन गए। लिखित संविधान की व्यवस्था की गयी। स्वतंत्र संयुक्त राज्य की स्थापना की गयी और जार्ज वाशिंगटन प्रथम राष्ट्रपति हुए। राष्ट्रपति का कार्यकाल चार वर्ष रखा गया। उसे वैदेशिक मामलों की देखभाल तथा उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार दिया गया, किन्तु सीनेट की स्वीकृति के आधार पर ही वह कोई काम कर सकता था। संविधान में दो सदनों की व्यवस्था की गयी जिन्हें सीनेट और प्रतिनिधि सभा नाम दिया गया। सीनेट में प्रत्येक राज्य को समान प्रतिनिधित्व मिला तथा प्रतिनिधि सभा के सदस्यों का निर्वाचन भी समूचे देश के मतदाताओं द्वारा होता था। कानून की रक्षा के उद्देश्य से सर्वोच्च न्यायालय की भी स्थापना हुई।

मताधिकार कर देने वालों तक ही सीमित रखा गया था। परिणामस्वरूप, आधे से अधिक नागरिकों को मत देने का अधिकार नहीं मिला। व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वशासन और समाज में आदरणीय स्थान की प्राप्ति का आदर्श मध्यमवर्ग तक ही सीमित था। नीग्रो और गुलामों को स्वतंत्रता नहीं दी गयी थी। उनकी स्थिति में कोई राजनीतिक अथवा सामाजिक परिवर्तन नहीं हुआ था। उग्रवादी विचारक जैफरसन ने दास व्यापार का अंत करने के उद्देश्य से एक संशोधन पेश किया था, परन्तु उस पर कोई सुनवाई नहीं हुई। बदले में गुलामों को बनाए रखने के लिए एक धारा और जोड़ दी गयी। इससे यह स्पष्ट है कि "अधिकारों की घोषणा (Declaration of Rights) संविधान का एक प्रशंसनीय अनुच्छेद अवश्य था, किन्तु व्यवहारतः इसके अनुसार काम नहीं हुआ। नेताओं को वयस्क मताधिकार से वंचित रखा गया एवं गुलामी प्रथा बनायी रखी गयी।

सामाजिक दृष्टिकोण से क्रान्ति

का परिणाम विशेष महत्वपूर्ण था। युद्ध के समय टोरी दल के बहुत से समर्थक ब्रिटेन का साथ देते थे। ऐसे लोगों के लिए अमेरिका में रहना कठिन हो गया था। बहुत से कुलीन टोरी कनाडा, वेस्ट इण्डीज अथवा इंगलैंड चले गए थे। इन लोगों के पास बड़ी-बड़ी रियासतें थीं। देश छोड़कर भागने वालों की जमीन जब्त कर ली गयी। व्यापारी, वकील और अन्य लोगों में वह जमीन बाँट दी गयी। न्यूयार्क, मैसाचूसेट्स और बोस्टन में बहुत से व्यक्ति जमीन के नये अधिकारी हुए। क्रान्ति के बाद सामाजिक संगठन को भी सुधारने का काम हुआ। अमेरिका में इण्टेल (Entail) और प्रीमोजेनिचर (Promogeniture) नामक दो प्रकार की प्रथा थी। पहली प्रथा के अनुसार किसी भी परिवार की रियासत का बँटवारा नहीं किया जा सकता था। दूसरी प्रथा के अनुसार पिता की मृत्यु के बाद बड़ा पुत्र ही रियासत का उत्तराधिकारी हो सकता था। ये दोनों प्रथाएँ अंग्रेजी नियमों पर आधारित थीं। जैफरसन ने 1776 ई० में इण्टेल-प्रथा को खत्म किया और दस वर्ष बाद दूसरी प्रथा भी खत्म कर दी गयी। नये उत्तराधिकार नियम के अनुसार जायदाद का बँटवारा सभी पुत्र-पुत्रियों के बीच समान रूप से कर दिया जाता था। इस कानून के द्वारा स्त्रियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। जमीन पर सामंतवादी प्रतिबंध नहीं रहा।

अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में औरतों का योगदान प्रशंसनीय था। उनलोगों ने युद्ध में गुप्तचर का काम, अस्त्र-शस्त्र बनाने तथा भोजन एवं वस्त्र तैयार करने में काफी सहायता दी थी। परन्तु, उन्हें मताधिकार से वंचित रखा गया। औरतों की तरह गुलामों को भी स्वतंत्रता नहीं मिली। वे बँधुआ मजदूर बने रहे। उन्हें सेना में भी भरती

होने की सुविधा नहीं मिली।

अमेरिका के लोग युद्ध के समय ही स्वावलंबी बनने का महत्त्व समझ चुके थे। अतः अमेरिका में स्वतंत्र रूप से उद्योग-धंधों का विकास प्रारंभ हुआ। लोहा, कपड़ा और युद्ध में काम आने वाले अस्त्र-शस्त्रों के कल-कारखाने खोले गए। युद्धकाल में विदेशी सहायता के बावजूद अमेरिका पर कर्ज का बोझ बढ़ गया था, अतः अर्थव्यवस्था को संतुलित रखने के लिए कागजी मुद्रा का प्रचलन हुआ। प्रत्येक राज्यों में नागरिकों से कर वसूल किया जाने लगा और अमेरिकी कांग्रेस तथा राज्यों ने एक नयी वित्त-पद्धति का विकास किया। इस प्रकार अमेरिका की आर्थिक प्रगति हुई।

जातीय समानता और धार्मिक स्वतंत्रता का संदेश अमेरिका की क्रान्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम माना जाता है। प्रत्येक राज्य में अंग्रेजी चर्च की पुरानी व्यवस्था समाप्त कर दी गयी और जनता को धार्मिक स्वतंत्रता दी गयी कि वे किसी भी धर्म को मान सकते हैं। धार्मिक स्वतंत्रता दिलाने का श्रेय टॉमस पेन को था जो धर्मनिरपेक्ष राज्य का समर्थक था।

स्वतंत्रता संग्राम के समय बहुत से विद्यालय बंद हो गए थे। अब सरकार ने शिक्षा की प्रगति की ओर ध्यान दिया। जैफरसन ने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आमलोगों को शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में जैफरसन की देन बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। क्रान्ति के बाद समाचार पत्रों की संख्या बढ़ी और जनमत को पनपने-फलने का अवसर मिला। नयी शिक्षा पद्धति, सामाजिक संगठन, आर्थिक प्रगति एवं धार्मिक स्वतंत्रता के फलस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका की आशातीत प्रगति हुई और विश्व के महान राष्ट्रों में उसकी गिनती होने लगी।

अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव विदेशों में भी पड़ा। इसने यूरोप की राजनीति को एक नया मोड़ प्रदान किया।

यह स्वतंत्रता संग्राम ब्रिटेन के लिए घातक सिद्ध हुआ। तेरह अमरीकी उपनिवेशों के स्वाधीन हो जाने से ब्रिटेन के उद्योग धंधे एवं वाणिज्य-व्यवसाय को काफी धक्का पहुँचा। स्वतंत्रता संग्राम में पराजित होने के बाद ब्रिटेन की प्रतिष्ठा घट गयी। यूरोप के महान राष्ट्र ब्रिटेन से अलग हो गए जिससे अन्य महादेशों में ब्रिटेन की स्थिति दयनीय हो गयी। युद्ध में हार जाने से जॉर्ज तृतीय की बड़ी बेइज्जती हुई। लॉर्ड नॉर्थ को 1782 ई० में त्याग पत्र देना पड़ा। और उसके मंत्रित्व-काल के समाप्त होते ही जॉर्ज तृतीय का व्यक्तिगत शासन भी समाप्त हो गया। 1783 ई० में पिट छोटा ने मंत्रिमंडल का निर्माण किया जिसने राजा की कृपा से नहीं बल्कि लोकसभा के बहुमत पर शासन किया। छोटे पिट के समय प्रधानमंत्री तथा मंत्रिमंडल की स्थिति मजबूत हो गयी। राष्ट्रीय शासन पर राजा का प्रभुत्व मिट गया और मंत्रिमंडल का शासन पुनः प्रारंभ हुआ। अमेरिका में हार के फलस्वरूप ~~इसके~~ ब्रिटेन ने अपनी नीति बदल दी। हठवादिता के बदले उपनिवेशों में उदारता की नीति अपनाई गयी।

सप्तवर्षीय युद्ध के फलस्वरूप कनाडा पर इंगलैंड का अधिकार हो गया था। पहले कनाडा फ्रांस के अधीन था। अतः कनाडा में अंग्रेज तथा फ्रांसीसियों में जातीय एवं धार्मिक मतभेद था। मतभेद और असंतोष को दूर करने के लिए क्यूबेक ऐक्ट (1774 ई०) पास हुआ। इस ऐक्ट से फ्रांसीसी संतुष्ट हो गए परन्तु आगे चलकर जब दोनों जातियों में मतभेद प्रारंभ हुए तो अंग्रेजों को विवश होकर उन्हें औपनिवेशिक स्वराज्य देना पड़ा।

1770 ई० में आस्ट्रेलिया का पता लगा था। पहले ब्रिटेन से कैदी अमेरिका भेजे जाते थे, परन्तु स्वतंत्रता संग्राम के बाद इन कैदियों को आस्ट्रेलिया भेजा जाने लगा। उनकी आबादी धीरे-धीरे बढ़ी और आस्ट्रेलिया का विकास हुआ। अतः आस्ट्रेलिया का विकास अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का प्रत्यक्ष परिणाम था।

इस स्वतंत्रता संग्राम से आयरलैंड निवासी भी प्रभावित हुए। इसके परिणामस्वरूप ही आयरलैंड में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई और वे अपनी माँगों की पूर्ति करवाने में सफल हुए। ब्रिटिश सरकार ने 1782 ई० में स्वतंत्र पार्लियामेण्ट का निर्माण करने का अधिकार आयरलैंड को दे दिया और व्यापारिक स्वतंत्रता भी उन्हें प्राप्त हुई।

अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम ने प्रत्यक्ष रूप से फ्रांस की राज्यक्रांति की पृष्ठभूमि तैयार की। बहुत से फ्रांसीसी सैनिक अमेरिकी युद्ध से लौटने के बाद फ्रांस में क्रान्ति का प्रचार करने लगे और स्टेट्स जनरल की बैठक के साथ ही फ्रांस में क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ।

इस प्रकार अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम इतिहास की एक युगान्तकारी घटना है। इसने राष्ट्रीय भावना को अन्य देशों में भी जाग्रत किया। इस संग्राम के पश्चात ही विश्व के अन्यान्य पराधीन देशों में स्वतंत्रता की शहनाई बजने लगी। इसका परिणाम विश्वव्यापी था। इसके फलस्वरूप, प्रजातांत्रिक शक्तियाँ आगे बढ़ीं। समता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता एवं लोकतंत्रवाद का विकास आधुनिक इतिहास में अमेरिकी स्वाधीनता संग्राम से ही प्रारंभ होता है।